क्रं. –82, 10/10/2017

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
Indira Gandhi Krishi Vishwavidyalaya
शहीद गुंडाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र
Shaheed Gundadhoor College of Agriculture & Research Station
कुम्हरावण्ड, जगदलपुर – 494001 Kumhrawand, Jagdalpur – 494001 (C.G.)
Ph. (O) - 07782 - 229150 (Fax) 229360 (R) 229343 Email - zars_igau@rediffmail.com

क्र./श.गु.कृ.महा.एवं अनु.केन्द्र/2017–18/ GKMS *जगदलपुर, दिनांक 10/10/2017*

बस्तर पठार कृषि जलवायु क्षेत्र के लिए कृषि सलाह सेवा बुलेटिन (07 से 10 अक्टूबर 2017)

पिछले सप्ताह की विशिष्ठ मौसम स्थितियाँ

वर्षा मि.मी.	96.5
अधिकतम तापमान डिग्री. से.	29.7 - 31.9
न्युनतम तापमान डिग्री. से.	22.3 - 23.0
सापेक्ष आर्द्रता प्रतिशत	62 - 99
वायु गति कि.मी./घंटा	1.8 - 3.1

पिछले सप्ताह कृषि मौसम वेधशाला, कुम्हरावण्ड में मि.मी. **96.5** वर्षा दर्ज की गई। अधिकतम तापमान **29.7** से **31.9** डिग्री सेंग्रे. के बीच रहा। न्यूनतम तापमान **22.3** से **23.0** डिग्री सेग्रे. के मध्य रहा। सापेक्ष आर्द्रता **62** से **99** प्रतिशत के मध्य दर्ज की गई। वायु गति **1.8** से **3.1** किमी./घंटा के मध्य रही।

11 से 15 अक्टूबर 2017 तक मौसम पुर्वानुमान दन्तेवाड़ा

मौसम कारक	पुर्वानुमान				
	दिवस –1 11 **अक्टूबर**	दिवस –2 12 **अक्टूबर**	दिवस –3 13 **अक्टूबर**	दिवस –4 14 **अक्टूबर**	दिवस –5 15 **अक्टूबर**
वर्षा मि.मी.	**35**	**10**	**10**	**12**	**10**
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	30	30	30	30	29
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	22	22	22	22	21
कुल बादल की मात्रा (प्रतिशत)	100	87.5	75	100	62.5
सापेक्ष आर्द्रता (सुबह/शाम)	97/60	97/65	96/60	96/60	96/60
वायु गति कि. मी./घण्टा एवं दिशा	4/S	3/SE	2/SE	2/SE	2/SE

भारत मौसम विज्ञान विभाग रायपुर द्वारा जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले **5** दिनो में छत्तीसगढ़ के बस्तर पठारी भाग में बारिश एवं बादल छायें रहने की तथा हवा में **60 से 97** प्रतिशत नमी होने की संभावना है। अधिकतम तापमान लगभग 29 **से** 30°C रहने की संभावना है एवं न्यूनतम **21 से 22**°C के बीच दर्ज किए जाने की संभावना है। आने वाले दिनो में हवा **दक्षिण–पूर्व** दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग **2** से **4** किलोमीटर/घंटा रहने कि संभावना है।

मौसम आधारित कृषि सलाह

<table>
<tr><td>बीजोपचार</td><td>खरीफ मौसम के फसलो के बीजों का बीजोपचार जरूर करें।
➢ (क) अदैहिक दवायें:– इन दवाओं से उपचारित करने पर सभी फसलों के बीज सतह पर मौजूद फफूंद नष्ट जाती है। इनमें प्रमुख थीरम, केप्टान, डायथेन एम–45। इन दवाओं की 3.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपयोग करें।
➢ (ख) दैहिक दवायें:– इन दवाओं से उपचारित करने से बीज के भीतर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है साथ ही यह बीजांकुर को भी 15–20 दिनों तक रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है। इनमें मुख्यतः वीटावैक्स एवं बाविस्टिन का उपयोग 2 से 2.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीजदर से उपयोग में लाना चाहिए।
➢ (ग) जैव उत्पाद (बायोएजेन्ट) – ट्राइकोड्रमा हारजियनम या ट्राइकोड्रमा स्पीजीज6–8 ग्राम प्रति किलोग्राम बीजदर से उपचारित करे तथा आवश्यकता होने पर जीवाणु स्यूडोमोनास फ्यूरोसेन्स से भी बीजोपचार करे।</td></tr>
<tr><td>खरीफ / रबी फसल</td><td>रबी दलहनी फसलें एवं उन्नत किस्में
➢ तिवड़ा की किस्में – रतन, प्रतीक एवं महातिवड़ा।
➢ चना की किस्में – जे.जी.–74, विजय, वैभव, जे.जी.–14, इंदिरा चना–1, जे.एस.सी.–56।
➢ मटर की किस्में – अंबिका, आदर्श (आई.पी.एफ. 99–25), शुभ्रा, जे.पी. –885, पारस, विकास (आई.पी.एफ.डी. 99–13), प्रकाश(आई.पी.एफ.डी. 1–10), आई.पी.एफ.डी. –10–12 ।
➢ मसूर की किस्में – लेन्स–4076, आई.पी.एल.–81 (नूरी), जे.एल.–3, आई.पी.एल.–316 ।

तिलहन फसलें एवं उन्नत किस्में
➢ अलसी की किस्में– आर.–552, किरन, टी.–397, इंदिरा अलसी–32(आर.एल.सी.– 81), कार्तिका, दीपिका (आर.एल.सी.– 78), आर.एल.सी.– 92.
➢ सरसों की किस्में– पूसा जय किसान (बी.डब्ल्यू. – 902), पूसा बोल्ड, क्रान्ति (पी.आर. 15), वरदान (आर.के. 1467), वरूणा (टी. – 59), छत्तीसगढ़ सरसों –1, बस्तर तोरिया.
➢ कुसुम की किस्में– जे.एस.एफ.– 1, जे.एस.आई.– 7, भीमा, ए–1, नारी एन.एच.–1, नारी एच. –15, पी.बी.बी.एन.एस. – 12, नारी – 6, पी.बी.एन.एस. – 40.
❖ जल्दी पकने वाली कस्मों की कटाई पश्चात् तोरिया की उन्नत किस्में इंदिरा तोरिया–1, पन्त तोरिया–30, टी.–9, पी.टी–303 एवं अनुराधा में से किसी एक का चयन कर बुवाई करें।
❖ यदि धान फसल में पुष्पन नही हुआ है तो अतिम मात्रा नत्रजन की देवें।
❖ उतेरा फसलों की व्यवस्था कर कटाई पूर्व छिडकाव कर कटाई करें ताकि भूमि की नमी का उचित उपयोग हो सकें।
❖ रबी ऋतु हेतु साग सब्जियों की नर्सरी तैयार कर एवं तैयार पौध लगा देवें।
❖ धान में क्षुठा कंडवा (लाई फुटना) रोग से बचाव हेतु धान में पुष्प निकलने के पूर्व एवं पूष्प पूरा निकल जाने के बाद छिड़काव कापर ऑक्सीक्लोराइ 2ग्राम प्रति ली. पानी की दर से दिड़काव करें।
❖ उड़द, मूंग में चुर्णिल आसिता रोग आने पर सल्फर पाउडर 2 ग्राम/लीटर पानी या केराथेन,</td></tr>
</table>

	कैलेक्जिन 1 ग्राम प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। ❖ रामतिल में पत्तिया खाने वाले किड़े के लिए क्लोरपायरीफास या क्विनालफॉस का 1.5 मिली प्रति लिटर के हिसाब से छिड़काव करें। ❖ सभी प्रकार के माहो कीट नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड का 0.5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर उपयोग करें। ❖ सभी खेतों में नमी संरक्षित करें। जहॉ सम्भव हो सके सब्जियों में पलवार का उपयोग करे। ❖ बंकी एवं पत्ती मोड़क कीट के नियंत्रण के लिये क्लोरापायरीफॉस 2मि.ली./ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें। ❖ धान एवं लघु धान्य फसलों मे झुलसा (ब्लास्ट) रोग के लक्षण दिखाई देने पर ट्राइसाइक्लाजोल 100 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़के।
सब्जी	❖ भिण्डी एवं बरबट्टी में तना छेदक एवं फल भेदक का प्रकोप होने पर इसके नियंत्रण हेतु 1 से 1.5मिली. क्लोरोपायरीफास का छिड़काव करें। ❖ सब्जियों में मैनी, तैला एवं चैंपा का आक्रमण होने पर पीला प्रपंच लगाये साथ ही डायमेथोएट का 1.5 मि.ली. / लिटर पानी की दर से छिड़काव कर सकते है।
पशुपालन	❖ कृमिनाशक का उपयोग प्रत्येक तीन माह के अन्तराल पर मुर्गीयों को कृमि रोग से मुक्त करने के लिये करें। ❖ यथा सम्भव पशुवाड़े को सुखा रखे। जिससे कि कीट एवं बीमारियों से बचाव के साथ–साथ पशुओं एवं पशुपालक के फिसलने से भी बचाव हो सके।

प्रयोजक – भारतीय मौसम विभाग (भूमि विज्ञान मंत्रालय), नई दिल्ली, सहयोग–अखिल भारतीय समन्वित बारानी खेती परियोजना, हैदराबाद

अधिष्ठाता